आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024
Received: 20/12/2024; Published: 30/12/2024

कविता

"अक्क महादेवी के वचन"

अनुवाद- सुभाष राय

1

प्रेम किया है सुन्दरतम से
मरण न उसका, क्षरण न उसका
रूप न उसका, देस न उसका
जन्म नहीं है, अन्त नहीं है
माँ, सुन, मेरा प्रेम वही है

प्रेम किया है सुन्दरतम से
जिसे न बन्धन, न कोई भय है
जाति न कोई, जगह न कोई
सुन्दर इतना, मुश्किल कहना

जूही जैसे धवल कन्त संग मुझको रहना

बाक़ी पतियों का क्या करना
जिन्हें एक दिन मर जाना है
पीत पात-सा झर जाना है
उन्हें उठा लो, ले जाओ, चूल्हे में डालो

मेरा पति तो अजर, अगम है
एक अकेला, सुन्दरतम है

******

2

याद करता जिस तरह
प्रिय पर्वतों को, विंध्य को
वह झुण्ड से बिछड़ा
अचानक क़ैद में जाकर फँसा हाथी
ठीक वैसे याद करती मैं तुम्हें

याद करता जिस तरह
अपनी प्रिया को पिंजरे में कैद तोता
ठीक वैसे याद करती मैं तुम्हें

हे प्रभो जूही सरीखे !
रास्ते मुझको दिखा,
अब तो बुला ले पास कह कर,
अरे ओ बच्ची ! इधर, इस राह से आ

****

3

प्रिय ! अगर तुम सुन सको
सुन लो, नहीं तो मत सुनो
सहन कर सकती नहीं
जीना तुम्हें गाये बिना

प्रिय ! अगर चाहो मुझे देखो
न चाहो मत निहारो
सहन कर सकती नहीं
जीना तुम्हें देखे बिना

प्रिय ! अगर समझो करो स्वीकार
या फिर करो अस्वीकार
सहन अब होगा न जीना
एक आलिंगन बिना

प्रिय ! अगर खुश हो सको, खुश हो
नहीं तो मत रहो ख़ुश
सहन मुझको है नहीं
जीना बिना आराधना

प्रिय ! शिवा सुन, मैं तुम्हारी
अर्चना में हृदय वारूँगी
ख़ुशी के पेंग मारूँगी

(दिगंबर विद्रोहिणी अक्क माहदेवी पुस्तक से साभार)

****